



NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2017

HINDI FIRST ADDITIONAL LANGUAGE: PAPER I

MARKING GUIDELINES

Time: 2 hours

80 marks

These marking guidelines are prepared for use by examiners and sub-examiners, all of whom are required to attend a standardisation meeting to ensure that the guidelines are consistently interpreted and applied in the marking of candidates' scripts.

The IEB will not enter into any discussions or correspondence about any marking guidelines. It is acknowledged that there may be different views about some matters of emphasis or detail in the guidelines. It is also recognised that, without the benefit of attendance at a standardisation meeting, there may be different interpretations of the application of the marking guidelines.

भाग क

प्रश्न एक

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसपर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में हिन्दी में दीजिए।

समय

अनिता शर्मा

समय, सफलता की कुंजी है। समय का चक्र अपनी गति से चल रहा है या यूं कहें कि भाग रहा है। अक्सर इधर-उधर कहीं न कहीं, किसी न किसी से ये सुनने को मिलता है कि क्या करें समय ही नहीं मिलता। वास्तव में हम निरंतर गतिमान समय के साथ कदम से कदम मिला कर चल ही नहीं पाते और पिछड़ जाते हैं। समय जैसी मूल्यवान संपदा का भंडार होते हुए भी हम हमेशा उसकी कमी का रोना रोते रहते हैं क्योंकि हम इस अमूल्य समय को बिना सोचे समझे खर्च कर देते हैं।

विकास की राह में समय की बरबादी ही सबसे बड़ा शत्रु है। एक बार हाँथ से निकला हुआ समय कभी वापस नहीं आता है। हमारा बहुमूल्य वर्तमान क्रमशः भूत बन जाता है जो कभी वापस नहीं आता। सत्य कहावत है कि बीता हुआ समय और बोले हुए शब्द कभी वापस नहीं आ सकते। कबीर दास_जी ने कहा है कि,

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलै होयेगी, बहुरी करेगा कब॥

सच ही तो है मिन्हों, किसी भी काम को कल पर नहीं टालना चाहिए क्योंकि आज का कल पर और कल का काम परसों पर टालने से काम अधिक हो जायेगा। बासी काम, बासी भोजन की तरह अरुचीकर हो जायेगा। समय जैसे बहुमूल्य धन को सोने-चाँदी की तरह रखा नहीं जा सकता क्योंकि समय तो गतिमान है। इस पर हमारा अधिकार

तभी तक है जब हम इसका सदुपयोग करें अन्यथा ये नष्ट हो जाता है। समय का उपयोग धन के उपयोग से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि हम सभी की सुख-सुविधा इसी पर निर्भर है।

चाणक्य के अनुसार- जो व्यक्ति जीवन में समय का ध्यान नहीं रखता, उसके हाँथ असफलता और पछतावा ही लगता है।

समय जितना कीमती और वापस न मिलने वाला तत्व है उतना उसका महत्व हम लोग प्रायः नहीं समझते। परन्तु जो लोग इसके महत्व को समझते हैं वो विश्व पटल के इतिहास पर सदैव विद्यमान रहते हैं।

“ईश्वरचन्द्र विद्यासागर समय के बड़े पाबंद थे। जब वे कॉलेज जाते तो रास्ते के दुकानदार अपनी घडियाँ उन्हे देखकर ठीक करते थे।”

“गैलेलियो द्वा बेचने का काम करते थे। उसी में से थोड़ा-थोड़ा समय निकाल कर विज्ञान के अनेक आविष्कार कर दिये।”

“घर-गृहस्थी के व्यस्त भरे समय में हैरियट वीचर स्टो ने गुलाम प्रथा के विरुद्ध आग उगलने वाली पुस्तक “टॉम काका की कुटिया” लिख दी जिसकी प्रशंसा आज भी बेजोड़ रचना के रूप में की जाती है। कहने का आशय है कि प्रत्येक विकासशील एवं उन्नतशील लोगों में एक बात समान है- समय का सदुपयोग।

समय का प्रबंधन प्रकृति से स्पष्ट समझा जा सकता है। समय का कालचक्र प्रकृति में नियमित है। दिन-रात, ऋतुओं का समय पर आना-जाना है। यदि कहीं भी अनियमितता होती है तो विनाश की लीला भी प्रकृति सीखा देती है। समय की उपेक्षा करने पर कई बार विजय का पासा पराजय में पलट जाता है। नेपोलियन ने आस्ट्रिया को इसलिए हरा दिया कि वहाँ के सैनिकों ने पाँच मिनट का विलंब कर दिया था, लेकिन वहीं कुछ ही मिनटों में नेपोलियन बंदी बना लिया गया क्योंकि उसका एक सेनापति कुछ विलंब से आया। वाटरलू के युद्ध में नेपोलियन की पराजय का सबसे बड़ा कारण समय की अवहेलना ही थी। कहते हैं खोई दौलत फिर भी कमाई जा सकती है।

भूली विद्या पुनः पाई जा सकती है किन्तु खोया हुआ समय पुनः वापस नहीं लाया जा सकता सिर्फ पश्चाताप ही शेष रह जाता है।

समय के गर्भ में लक्ष्मी का अक्षय भंडार भरा हुआ है, किन्तु इसे वही पाते हैं जो इसका सही उपयोग करते हैं। जापान के नागरिक ऐसा ही करते हैं, वे छोटी मशीनों या खिलौनों के पुर्जों से अपने व्यावसायिक कार्य से फुरसत मिलने पर नियमित रूप से एक नया खिलौना या मशीनें बनाते हैं। इस कार्य से उन्हे अतिरिक्त धन की प्राप्ति होती है। उनकी खुशहाली का सबसे बड़ा कारण समय का सदुपयोग ही है।

समर्थ गुरु स्वामी रामदास कहते थे कि-

**एक सदैव पणाचैं लक्षण।
रिकामा जाऊँ ने दो एक क्षण॥**

अर्थात्, “जो मनुष्य वक्त का सदुपयोग करता है, एक क्षण भी बरबाद नहीं करता, वह बड़ा सौभाग्यवान होता है।“

समय तो उच्चतम शिखर पर पहुँचने की सीढ़ी है। जीवन का महल समय की, घंटे-मिनटों की ईंट से बनता है। प्रकृति ने किसी को भी अमीर गरीब नहीं बनाया उसने अपनी बहुमुल्य संपदा यानि की चौबीस घंटे सभी को बराबर बांटे हैं। मनुष्य कितना ही परिश्रमी क्यों न हो परन्तु समय पर कार्य न करने से उसका श्रम व्यर्थ चला जाता है। वक्त पर न काटी गई फसल नष्ट हो जाती है। असमय बोया बीज बेकार चला जाता है। जीवन का प्रत्येक क्षण एक उज्जवल भविष्य की संभावना लेकर आता है। क्या पता जिस क्षण को हम व्यर्थ समझा कर बरबाद कर रहे हैं वही पल हमारे लिए सौभाग्य की सफलता का क्षण हो। आने वाला पल तो आकाश कुसुम की तरह है इसकी खुशबु से स्वयं को सराबोर कर लेना चाहिए।

फ्रैंकलिन ने कहा है – समय बरबाद मत करो, क्योंकि समय से ही जीवन बना है।

ये कहना अतिशयोक्ति न होगी कि, वक्त और सागर की लहरें किसी की प्रतिक्षा नहीं करती। हमारा कर्तव्य है कि हम समय का पूरा-पूरा उपयोग करें।

१.१ "समय" को अपने शब्दों में वर्णन कीजिए ?

समय, सफलता की कुंजी है। समय का चक्र अपनी गति से चल रहा है या यूं
कहें कि भाग रहा है। अक्सर इधर-उधर कहीं न कहीं, किसी न किसी से ये
सुनने को मिलता है कि क्या करें समय ही नहीं मिलता। वास्तव में हम निरंतर
गतिमान समय के साथ कदम से कदम मिला कर चल ही नहीं पाते और पिछड़
जाते हैं

१.२ निम्नलिखित पंक्तियों को अपने शब्दों में संक्षेप व्याख्या कीजिए

"काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।

पल में परलै होयेगी, बहुरी करेगा कब"।।?

सच ही तो है मित्रों, किसी भी काम को कल पर नहीं टालना चाहिए क्योंकि
आज का कल पर और कल का काम परसों पर टालने से काम अधिक हो
जायेगा। बासी काम, बासी भोजन की तरह अरुचीकर हो जायेगा। समय जैसे
बहुमूल्य धन को सोने-चाँदी की तरह रखा नहीं जा सकता क्योंकि समय तो
गतिमान है

१.३ "विकासशील एवं उन्नतशील" ? अपने शब्दों में समझाइए।

२ ईश्वरचन्द्र विद्यासागर समय के बड़े पाबंद थे। जब वे कॉलेज जाते तो रास्ते के
दुकानदार अपनी घडियाँ उन्हे देखकर ठीक करते थे।

३ "गैलेलियो दवा बेचने का काम करते थे। उसी में से थोड़ा-थोड़ा समय निकाल कर
विज्ञान के अनेक आविष्कार कर दिये।"

१.४ इन मुहावरों के अर्थ लिखिए :

१.४.१ वक्त और सागर की लहरें किसी की प्रतिक्षा नहीं करती।

समय का प्रबंधन प्रकृति से स्पष्ट समझा जा सकता है। समय का कालचक्र
प्रकृति में नियमित है। दिन-रात, ऋतुओं का समय पर आना-जाना है। यदि
कहीं भी अनियमितता होती है तो विनाश की लीला भी प्रकृति सीखा देती है।
समय की उपेक्षा करने पर कई बार विजय का पासा पराजय में पलट जाता है

१.४.२ बीता हुआ समय और बोले हुए शब्द कभी वापस नहीं आ सकते।

विकास की राह में समय की बरबादी ही सबसे बड़ा शत्रु है। एक बार हाँथ से
निकला हुआ समय कभी वापस नहीं आता है। हमारा बहुमूल्य वर्तमान क्रमशः
भूत बन जाता है जो कभी वापस नहीं आता

१.५ समानार्थी शब्द लिखिए।

१.५.१ ऋतु मौसम १.५.२ विजय जीत

१.५.३ जीवन जिन्दगी १.५.४ कार्य काम

१.६ विलोल शब्द लिखिए।

१.६.१ आकाश धरती १.६.२ मूल्यवान बेकार

१.६.३ शत्रु मित्र १.६.४ सौभाग्य अभाग्य

१.७ इस कहानी से हम क्या सीखते हैं ?

समय के गर्भ में लक्ष्मी का अक्षय भंडार भरा हुआ है, किन्तु इसे वही पाते हैं जो इसका सही उपयोग करते हैं। जापान के नागरिक ऐसा ही करते हैं, वे छोटी मशीनों या खिलौनों के पुर्जों से अपने व्यावसायिक कार्य से फुरसत मिलने पर नियमित रूप से एक नया खिलौना या मशीनें बनाते हैं। इस कार्य से उन्हें अतिरिक्त धन की प्राप्ति होती है। उनकी खुशहाली का सबसे बड़ा कारण समय का सदुपयोग ही है।

भाग ख

प्रश्न दो

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसका संक्षिप्त विवरण कीजिए

बसंती ने माँ की कोठोरी की ओर देखा, ,” और प्याले मे उनके लिए चाय छानने लगी। वहू चूपचाप चली गई थी, अब नरेन्द्र भी चाय का आखिर घृट पीकर उठ खड़ा हुआ, केवल बसंती, । गजाधर बाबू ने एक घृट चाय पी फिर कहा,

थोड़ी देर मे उनके पली हाथ मे अर्द्ध का लोटा लिए निकली और अशुद्ध स्तुति कहते हुए तुलसी में डाल दिया। उन्हें देखते ही बसन्ती भी उठ गई। पली ने आकर गजाधर बाबू को देखा और कहा, गजाधर बाबू के मन में फॉस सी करक उठी, “अपने काका मे लग गए हैं आखिर बच्चे ही हैं।”

पली आकर चौकी में बैठ गई, उन्होंने नाक भैं चढ़ाकर चारो ओर जूठे बर्तनों ओर जूठे बर्तनो को देखा। फिर कहा, “सारे में जैठे बर्तन पढ़े हैं। इस घर मे धरम-करम कुछ नहीं। पूजा करके सीधे चोके में घुसी।” फिर उन्होंने नौ नौकर को पुकारा, जब उत्तर न मिला, तो एक बार और उच्च स्वर मे, फिर पति की ओर देखकर बोली — “बहू ने भेजा होग बाजार।” गजाधर बाबू बैठकर चाय और नाश्ते का इन्तजाम करते रहे। उन्हे अचानक ही गनेशी की याद आ गई। रोज सुबह, पैसेंजर आने से पहले वह गर्म गर्म पूरियॉ और जलेबी बनाता था।। चाय भी कितनी बढ़िया, । पैसेंजर भले ही रानीपुर लेट पहुँचे, गनेश ने चाय पहुँचाने मे कभी देर नहीं की।

भाग ग

प्रश्न ३

निम्न विज्ञापन को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न का उत्तर दीजिए।

श्वेता

TM
MODERN
DAIRIES
An ISO 9002 Company

शुद्ध दानेदार छी
दाने-दाने में भरी हैं
त्योहारों की खुशियाँ।

त्योहारों का मौसम यानी खुशियों भरा मौसम. ऐसे शुभ

अवसरों पर आपको चाहिए श्वेता शुद्ध

दानेदार छी. श्वेता का हर दाना आपके

भोजन में भरता है ऐसा स्वाद, जो हर

दिन रहे याद. इसलिए श्वेता शुद्ध दानेदार

छी ही लाएं और जी भर कर खुशियां मनाएं।

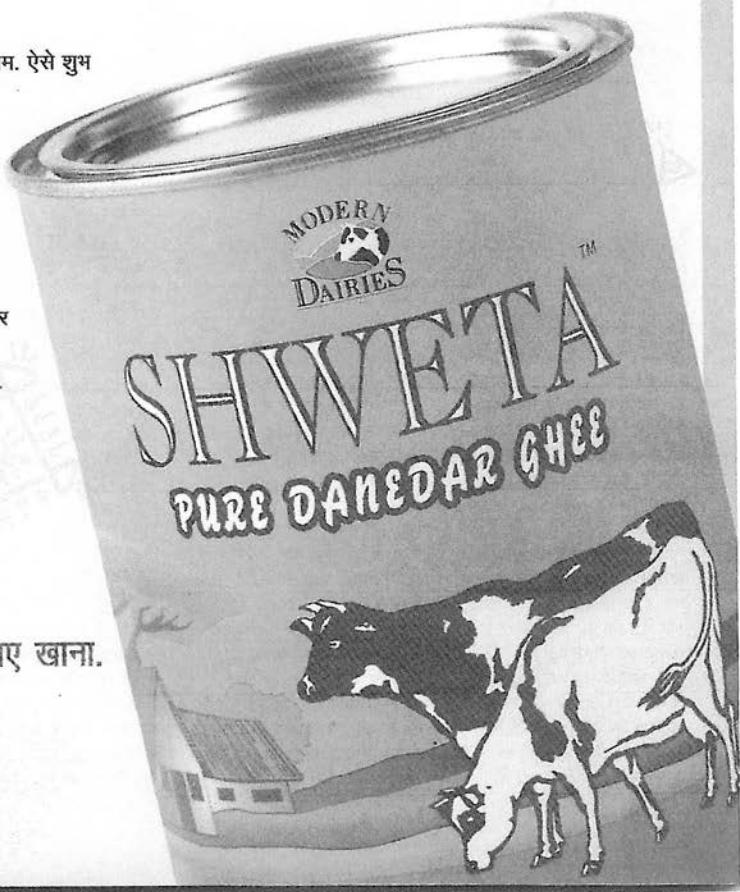
श्वेता™

शुद्ध दानेदार छी

शुद्ध हर दाना, स्वादिष्ट बनाए खाना.

मॉर्डन डेयरीज़ का एक उत्कृष्ट उत्पाद.

TM : व्यापार चिन्ह धारक मॉर्डन डेयरीज लि.



३.१ यह किस वस्तु का विज्ञापन है ?

यह धी की विज्ञापन है ।

३.२ “दाने-दाने में भरी हैं त्योहारों की खुशियाँ” :

३.२.१ “त्योहार” शब्द क्यों प्रयोग किया गया है ?

क्यों कि यह वस्तु पर्व में प्रयोग किया जाता है ।

३.२.२ ये क्यों बड़े अक्षरों में हैं ?

क्यों कि लोग इसको देख कर समझ आएँगे कि यह एक खास वस्तु है ।

३.३ शुद्ध हर दाना स्वादिष्ट बनाए खाना ... यह वाक्य आप में क्या जाग्रित करता है ?

यह धी अस्ली है ।

३.४ गाय का चित्र क्यों प्रयोग किया गया है ?

यह धी गाय के दूध से बनाया गया है ।

३.५ तीन भावात्मक शब्द विज्ञापन से चुन कर लिखिए, तथा उनके भावना भी बताईं ?

मौसम खुशियाँ स्वदिष्ट स्वाद त्योहार नए

प्रश्न ४

निम्नलिखित चित्र को ध्यान पूर्वक देखकर प्रश्नों का उत्तर दीजिए।



[Source: <IndianFunnyPicture.com>]

४.१ इस चित्र को उचित शीर्षक दीजिए।

सत्ता

४.२ खड़े हुए आदमी के चहरे को देखकर आप क्या सोचते हैं? निम्नलिखित शब्द के अनुसार लिखिए :

४.२.१ भावना :

कोधित

४.२.२ घटना :

वोट माँगने आते हैं। गरीब और राजनीति

४.३ चित्र के अध्ययन कर के बताओ क्या हो रहा है? १ गरीब अत्याचार से तंग है। वह राजनीति से घृणा करते हैं क्यों कि उसका स्थिती अब तक नहीं बदले।

४.४ निम्नलिखित प्रश्नों चित्र के अनुसार उत्तर का कारण दीजिए।

४.४.१ नीचे बैठे हुए आदमी कि स्थिथि बताओं? उत्तर का कारण वताइए।

वह गरीब है। वह आशा से जी रहे हैं। पर अब वह इस झूट को सहा नहीं सका।

४.४.२ प्लाकार्ड पर क्या संकेत है और पुरुष के लिए यह क्या अर्थ है?

आगर वह वोट देंगे तो वह राटी कपड़ा और मकान मिल सकेंगे। पर गरीब इस इमोशनल अत्याचार मानते हैं।

Total: 80 marks